कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 2

MJY–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (ज्योतिष)
(एम. ए. जे. वाई.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2023

एम.जे.वाई.–003 : पंचांग एवं मुहूर्त्त

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल* **दो** *खण्डों में विभाजित है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।* ***'क'*** *एवं* ***'ख'*** *खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड-क

नोट : *किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए :*

3×20=60

1. (क) पञ्चाङ्ग का स्वरूप एवम् पञ्चाङ्ग के उद्दश्य को स्पष्ट कीजिए।

   (ख) तिथि का परिचय देते हुए, तिथिस्वामी एवं दानों पक्ष की तिथियों का विस्तार से प्रतिपादन कीजिए।

(ग) नक्षत्र परिचय, नक्षत्रों की विभिन्न संज्ञायें तथा नक्षत्रों का राशियों में विभाजन विस्तार से दर्शाइए।

(घ) वार क्रम को शास्त्रविधि द्वारा स्पष्ट करते हुए ग्रहों के कक्षाक्रम पर भी विस्तार से लिखिए।

(ङ) विवाहसंस्कार में कालशुद्धि एवं विवाहलग्न के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

(च) विभिन्न संस्कारों में लग्न की उपयोगिता को विस्तार से लिखिए।

खण्ड-ख

2. किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $4 \times 10 = 40$

(क) तिथि वृद्धि एवं तिथि क्षय के विषय में लिखिए।

(ख) शुभकार्यों में वर्जित तिथि व वारों को कारण सहित लिखिए।

(ग) गण्डात नक्षत्रों के नाम व परिचय देते हुए इनके फल को भी लिखिए।

(घ) योग कितने हैं ? क्रमशः नाम लिखिए।

(ङ) भद्रा का स्वरूप व फल विवेचन कीजिए।

(च) विवाह में ग्राह्य व त्याज्य नक्षत्रों को पृथक-पृथक लिखिए।

(छ) मुहूर्त्त शब्द की व्याख्या कीजिए।

(ज) षोडश संस्कारों के नाम व साधारण परिचय लिखिए।